ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

जैनेन्द्रजी के उपन्यासो मे नारी– संघर्ष के स्वरूप

Forms of Female Struggle in the Novels of Jainendra

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

गायत्री चौहान
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर महा.
खरगोन, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

स्वतंत्रता के पूर्व और पाश्चात्य के उपन्यासकारों ने सामाजिक, आर्थिक ओर राजनीतिक परिस्थितियों को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है, इस समय के अधिकांश उपन्यास ऐसे है जिनमे उच्चवर्ग, मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग की भावनाओं को समावेश हुआ है। जैनेन्द्र के अधिकांश उपन्यास तथा कहानियां ग्रामीण के साथ–साथ शहरी क्षेत्रों मे उहापोह को भी प्रदर्शित करते है। जैनेन्द्र के अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्रियो की मनोदशा को स्पष्ट किया है। स्त्रियों की शिक्षा–दिशा और पारिवारिक परिस्थितियों में मध्य स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का श्रेय जैनेन्द्र जी को जाता है। जैनेन्द्र जी का मानना है कि स्त्रियो को परिवारवाद के अनुरूप ही रहना चाहिए। वे सदैव नारी के गतिमान रहने के लिए पक्षधर रहे है। हम कह सकते है। कि जैनेन्द्र जी के अधिकांश उपन्यासों की मूल समस्या नारी और उसके प्रेम तथा विवाह से सम्बद्ध हैं।

The pre-independence and western novelists have presented social, economic and political situations to us, most of the novels of this time contain the feelings of upper class, middle class and lower class. Most of Janendra's novels and stories reflect the chaos in rural as well as urban areas. Through her novels by Janendra, the mood of women is explained. The credit of presenting the realities of middle woman life to the society in the direction of education and family conditions of women, goes to Jainendra. Jainendra believes that women should remain in line with familyism. They are always advocating for the woman to be in motion. We can say That the main problem of most of Jainendra's novels is related to the woman and her love and marriage.

मुख्य शब्द : पक्षधर, परिवारवाद, उहापोह, परमोत्कर्ष, अंतर्विरोधों ।
Advocates, familyism, chaos, altruism, contradictions.

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के पूर्व और पाश्चात्य के उपव्यासकारो ने सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितियो को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। इस समय के अधिकांश उपन्यास ऐसे है जिनमें उच्चवर्ग, मध्यमवर्ग एवं निम्नवर्ग की भावनाओ का समावेश हुआ है। प्रेमचंदजी के बाद जैनेन्द्र जी और अज्ञेय जी ही ऐसे उपन्यासकार हुए है जिन्होने सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक स्थितियो के वास्तविकता प्रदान की है। यह दौर ऐसा था जब देश की जनता इस परिस्थितियो से अपेक्षाकृत कम जागरूक थी, इसलिए इन उपन्यासो को अत्यधिक महत्व प्राप्त हुआ है। इस समय के उपन्यासकार सामाजिक चेतना और राजनैतिक गरिमा के अनुरूप ही अपने शब्दो का प्रयोग करते थे। यही कारण रहा कि प्रेमचंद के उपन्यास समाज के सार्थक प्रयत्नो को स्पष्ट करते है, उसी प्रकार जैनेन्द्रजी ने भी सामाजिक यथार्थता का परिचय दिया है। जैनेन्द्रजी की भॉति प्रेमचंद जी भी सामाजिक के पक्षधर थे उन्होने ग्रामीण समाजवाद की वास्तविक परिभाषा प्रस्तुत की है। जैनेन्द्रजी के अधिकांश उपन्यास तथा कहानिया ग्रामीण के साथ–साथ शहरी क्षेत्रो के उहापोह को भी प्रदर्शित करते है।

पुर्नजागरण के पश्चात हिन्दी के उपन्यासो की प्रेम–धारण को विश्व साहित्य मे मनौवैज्ञानिक उपन्यासो के प्रवेश मे सर्वाधिक प्रभावित किया। सामान्यतः साहित्य मे इस शताब्दी के तीसरे दशक तक फ्रायड की विचारधारा पुरी तरह स्थापित हो चुकी थी। हेनरी जेम्स, जेम्स ज्वायस तथा वर्जिनिया वुल्फ आदि के उपन्यास लिखे जा चुके थे। भारत मे यदपि अप्रत्यक्ष रूप से उपन्यासो

की इस नई लहर का प्रभाव चौथे दशक के बाद ही दिखाई पडा, भारत के संदर्भ में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि पुर्नजागरण की जो प्रक्रिया बीसवी शताब्दी के साथ जोर पकडती गई थी, वह अभी समाप्त नही हुई थी, बल्कि गांधीवादी विचारधारा के रूप मे उसका परमोत्कर्ष दिखाई पड रहा था और इसी

समय साहित्य मे आने वाली मनोवैज्ञानिकता भी उसी का अंश बनकर विकसित हुई। अतः कही–कही गांधीवादी मान्यताओ तथा मनोवैज्ञानिक के मिश्रण से एक नई प्रेम–धारणा निर्मित करने की भी कोशिश की गई।

गांधीवादी तथा मुख्य रूप से फ्रायडिन मनोविश्लेषण से समानन्तर ही उस समय की प्रमुख साहित्यिक–धारा स्वच्छदता का भी इस प्रेम–धारणा पर पडा। इन तीनों के सम्मिलित प्रभाव से जो प्रेम–धारणा विकसित हुई उसने कुछ नये प्रकार के अंतर्विरोधो को भी जन्म दिया। मनोविज्ञान के प्रभाव से साहित्य मे अचेतन की महत्ता बढी तथा तर्क की प्रतिष्ठा घटी जो अब तक पुर्नजागरण के उपन्यासो का मुख्य आधार बना हुआ था। प्रसिद्व मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स ने चेतना का प्रवाह नामक जो नई विचार पद्धति स्थापित की उससे भी तत्कालीन औपन्यासिकता दूर तक प्रभावित हुई।

जैनेन्द्रजी ने अपने उपन्यासो के माध्यम से स्त्रियो की मनोदशा को स्पष्ट किया है। स्त्रियो की शिक्षा–दीक्षा और पारिवारिक परिस्थितियो मे मध्य स्त्री–जीवन की वास्तविकताओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का श्रेय जैनेन्द्र जी को ही जाता है। हिन्दी उपन्यास मे ''आदर्शवाद'' को प्रेमचंद और जैनेन्द्रजी ने ही विकसित किया है। आदर्शवाद को परिभाषित करते समय उन्होने परिवारवाद तथा समाजवाद के लिये भी अपनी रचनात्मक विचारधारा प्रेरित की है।

जैनेन्द्र जी का मानना है कि स्त्रियो को परिवारवाद के अनुरूप ही रहना चाहिए। वे सदैव नारी के गतिमान रहने के लिए पक्षधर रहे है। जैनेन्द्र जी ने आदर्शवाद के साथ–साथ नारी मुक्ति चेतना और शिक्षणवादको भी महत्ता प्रदान की है। नारी–मुक्ति, चेतना व संघर्ष प्रखर स्वर भी जैनेन्द्र के उपन्यासो मे स्पष्ट दिखाई देते है। सांमजस्यता और एकात्मकता उनके अस्त्र है ही, वे चाहकर भी यह अस्त्र नजर अंदाज नही कर सकते। विरोध के स्वर के लिए इनकी आवश्यकता होती है। उनका सान्यवाद और आदर्शवाद सभी सामान्य विचारधारा पर केन्द्रित रहे है।

जैनेन्द्र जी के पुरूष पात्रों के साथ–ही–साथ नारी पात्रों में भी अन्तर्द्वन्द की स्थिति देखी जा सकती है, जिसमें कल्याणी, भुवनमोहिनी, कट्टो इत्यादि है। नारी पात्रों पर समाज का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से पडता है, चाहे वह इनके लिये संघर्ष करें या नहीं करें। नारी मन की जिज्ञासा को शांत करने के लिए भी उपन्यासकारों ने एक रचना रची थी ।

जैनेन्द्र जी के नारी – पात्रों का जीवन प्रेमी और पति, पति और प्रेमी के मध्य अपने संबधों की मान्यताओ, स्थापनाओं के लिए संघर्ष करता रहता है। तथा– त्रिकोणीय प्रेम को जन्म देता है। यह त्रिकोणात्मक स्थिति ऐसी नारी से प्रांरभ होती है, जिसमें दुर्निवार आकाक्षाएँ और सेक्स विकृतियॉ है। कट्टो, सुनिता, कल्याणी आदि ऐसी ही नारी पात्र है।

जैनेन्द्रजी के उपन्यासों की नायिकाओं के अचेतन मन में उनकी विवके बुद्धि तथा यौन प्रवृत्ति में निरन्तरद्वंद्व चलता रहता है। उनके अचेतन मन में यह भाव गहरा धंसा रहता है, कि स्त्री के भी हदय होता है वह भी कुछ दायित्व रखती है, उसे बुद्धि होती है और वह निर्णय भी कर सकती है, तो पति की गुलामी क्यों करे ? दुसरी और जैनेन्द्र के नारी पात्र परम्परागत संस्कारों और रूढियों में बंधे रहते है इस कारण वे समाज की किसी परम्परा को तोडते नहीं है, किन्तु – दूसरी और आधुनिकता और नवीन मूल्यों के प्रति भी आकर्षित है।

शोध का उददेश्य

इस शोध पत्र को लिखने का मेरा उद्देश्य नारी की स्थिति को प्रस्तुत करना है । जैनेंद्र जी के उपन्यास मानवीय धरातल पर रहकर ही रचे गए हैं । समाज को अपना बनाकर और साथ में चलना ही उनकी सीख हैं । स्त्री की स्वतंत्रता में कोई बाधा ना पड़े और वह आधुनिकता के माध्यम से समाज को एक नई दिशा दें ।

निष्कर्ष

हम कह सकते है कि जैनेन्द्रजी के अधिकाष उपन्यासों की मूल समस्या नारी और उसके प्रेम तथा विवाह से सम्बद्ध है। प्रेम, आत्म –व्यथा, उत्सर्ग नारी जीवन का प्राण है। बुद्धि तथा हृदय का संघर्ष इन नारियों में निरन्तर होता– रहता है। जैनेन्द्र जी की नायिकाओं में कामवासना और विवेक का संघर्ष सर्वत्र मिलता है। अन्त में जैनेन्द्र जी की नायिकाओं के संबंध में इतना ही कहना यथेष्ट है ''जैनेन्द्र के उपन्यासों की लगभग सभी पत्नियॉ अपने पतियों से असंतुष्ट है। असंतुष्ट ही नही, वे सभी दूसरे पुरूषों से प्रेम करती है। पति के घर में ही खाती है, सोती है, व रहती है, उसी की आमदनी खर्च करती है , बच्चे पैदा करती है, पर पतियो से संतुष्ट नहीं है। अपने प्रेमियॉ के पिछे दौडते रहने में उन्हे सुख मिलता है। दूसरे पुरूषों के लिए जो, पहले कभी प्रेमी था या विवाह के बाद प्रेमी बना, वे अपना सब– कुछ न्यौछावर करने के लिए तत्पर दिखाई देती हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासः– डॉ.कान्ति वर्मा*
2. *जैनेन्द्र रचनावली खण्ड 1 से 12ः– संपादक निर्मल जैन*
3. *प्रेमचंद साहित्य मे व्यक्ति और समाजः– डॉ. रक्षा पुरी*
4. *जैनेन्द्र और उनके उपन्यासः– डॉ.रघुनाथशरण सालानी*
5. *हिन्दी उपन्यास प्रेम और जीवनः– डॉ.शान्ति भारद्वाज*
6. *जैनेन्द्रःसाहित्य और समीक्षाः– डॉ रामरतन भटनागर*
7. *मुक्तिबोध उपन्यास कि विवेचनाः– आचार्य विनय मोहन*
8. *हिन्दी उपन्यासो मे मध्यवर्गः– मंजुलता सिंह*
9. *हिन्दी उपन्यास मे नारी चित्रणः– डॉ बिन्दु अग्रवाल*